

ट्रेलिस एवं मचान विधि द्वारा करेले की जैविक खेती

अमृता जाधव¹, विजय बहादुर^{2*} एवं फूलचन्द चौरसिया³

^{1,2} उद्यान विभाग, शुआट्स प्रयागराज

³ उद्यान विभाग, कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, महासमुंद्र

Corresponding Author - vijaybahadur2007@gmail.com

परिचय

करेले की खेती सम्पूर्ण भारत में की जाती है। इसका फल खुरदरी सतह वाला और कड़वा होता है लेकिन उच्च पोषक तत्वों और औषधीय गुणों से युक्त होने के कारण इस सब्जी का जन-जीवन में बड़ा ही महत्व है। इसका ग्रीष्मकालीन सब्जियों में महत्वपूर्ण स्थान है।

करेले में मौजूद पोषक तत्व और औषधीय गुण

इसमें विटामिन ए, विटामिन बी6, विटामिन सी, विटामिन ई, राइबोफ्लेविन, पेंटोथेनीक एसिड, फोलेट, लाइकोपेन, नियसिन, पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन, मैंगनिशियम, फॉस्फोरस, कॉपर, जिंक और पानी पाया जाता है। करेला शरीर में शर्करा के स्तर को कम करने में मदद करता है, जिससे डायबिटीज में लाभ होता है। करेले के उपयोग से रक्त की सारी अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं और रक्त कोशिकाओं को भी साफ करने में मदद मिलती है।

करेला की खेती के लिये जलवायु

करेला की खेती के लिए आर्द्र जलवायु की जरूरत पड़ती है। करेला के पौधों की खासियत है कि यह अन्य कट्टू वर्गीय फसलों की अपेक्षा अधिक शीत सहन कर सकता है, पर अधिक वर्षा से फसल की उपज घट जाती है। करेला की खेती के लिए उत्तर एवं मध्य भारत की जलवायु अधिक अनुकूल मानी गयी है।

भूमि

इसको विभिन्न प्रकार की भूमियों में उगाया जा सकता है,

किन्तु उचित जल धारण क्षमता वाली जीवांशयुक्त हल्की दोमट मिट्टी इसकी सफल खेती के लिए उत्तम मानी गई है। वैसे उदासीन पी. एच. मान वाली मृदा इसकी खेती के लिए अच्छी रहती है।

प्रजातियाँ

इसकी विभिन्न प्रजातियाँ पूसा 2 मौसमी एकोयम्बूर



लौंग, अर्का हरित, कल्याणपुर बारह मासी, हिसार सेलेक्शन, पूसा विशेष, फैजाबादी बारह मासी, पूसा संकर है।

बीज मात्रा

करेले की खेती के लिए 5-6 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर बुवाई के लिए काफी होता है।

बीज को अंकुरित करने के लिए क्या करे ?

बीज को बुवाई से पहले उसको 24 घंटे पानी में भीगा दे और उसको 24 घंटे के बाद बाहर निकाले और उसको राख में लपेट कर या सूती कपड़े में लपेट कर रख दे ताकि अच्छे से अंकुरित हो जाये। अगर आपके पास गोबर है, तो आप

उसके मदद से भी अंकुरण कर सकते हैं। गोबर से अंकुरित के लिए जहां आपने गोबर जमा किया है वहां एक गड्ढा बनाये और उसमें बीज डाल दे 4 दिन बाद उसको निकाल कर उसका अंकुरण चेक करे। अगर अंकुरित हो जाये तो उसकी बुवाई कर दे क्योंकि बहुत बार हम आगे बुवाई तो कर देते हैं, लेकिन ठंड के कारण बीज जल्दी अंकुरित नहीं हो पाते अगर आप अंकुरित कर लेते हैं तो आपको अच्छा पैसा कमाने से कोई नहीं रोक सकता है। आप छोटी सी मात्रा में एक बार ये टिप्स जरूर इस्तेमाल करे जब आपको पूरा संतुष्टि मिल जाये तब बड़ी मात्रा में करे।

बीज बुवाई

एक स्थान पर से 2 -3 बीज 2.5-3.0 से.मि. की गहराई पर बोने चाहिए।

बोने का समय

गर्मी में इसकी बुवाई का उचित समय 15 फरवरी से 30 फरवरी तथा वर्षाकाल में 15 जुलाई से 30 जुलाई होता है।

बुवाई विधि

करेले की बुवाई दो प्रकार से की जाती है।

1. सीधे बीज से 2. पौध रोपण विधि से

1. सीधे बीज से : इस विधि में खेत तैयार करने के बाद बीजों को सीधे खेत में बो दिया जाता है।

2. पौध रोपण विधि से : इस विधि में पहले बीजों से पौध तैयार की जाती है और जब बुवाई का उचित समय आता है तो पहले से तैयार पौधों की बुवाई खेत में कर दी जाती है।

जैविक खाद का प्रयोग

करेले की फसल की अच्छी उपज के लिए खेत में खाद, कम्पोस्ट खाद का होना अनिवार्य है। इसके लिए गोबर की अच्छी प्रकार से सड़ी हुई 40-50 क्विंटल खाद साथ में 50 किलोग्राम नीम की खली का मिश्रण कर बुवाई पूर्व समान मात्रा में खेत में बिखेर दे। फसल उगने के 25-30 दिन बाद नीम का काढ़ा गौमूत्र के साथ मिलाकर मिश्रण तैयार कर छिड़काव करना चाहिए। हर 15-20 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

सिंचाई

करेले की सिंचाई वातावरण, मिट्टी की किस्म आदि पर निर्भर करती है। ग्रीष्म ऋतु में फसल की सिंचाई 3-5 दिन के अंतराल में करनी चाहिए। जबकि वर्षाकाल में सिंचाई वर्षा पर निर्भर करती है।

पौधे की देखभाल

अधिक उपज एवं फसल की बेहतर गुणवत्ता के लिए करेले की कटाई छटाई बहुत ही आवश्यक है। जैसे करेला में 3-7 गाँठ तक सभी द्वितीय शाखाओं को काट देना चाहिए।

मचान बनाना

इस विधि का प्रयोग वर्षाकाल में किया जाता है। करेले के पौधों में सहारा देना अति आवश्यक है। इसके लिए लोहे की एंगल या बांस की लकड़ी से मचान बनाते हैं। खम्भों के ऊपरी सिरों पर तार बांध कर पौधों को मचान पर चढ़ाया जाता है। सहारा देने के लिए दो खम्भों के बीच की दूरी 2 मीटर रखते हैं लेकिन ऊँचाई फसल के अनुसार अलग-अलग होती है करेला के लिए 4.5 फीट रखते हैं।

ट्रेलिस विधि द्वारा

करेले में आम तौर पर पौधों को सहारा देने या सधाई करने के लिए ट्रेलिस का उपयोग किया जाता है। यह हार्डस्केपिंग (आर्किटेक्चरल स्ट्रक्चर) आमतौर पर बांस, लकड़ी या धातु से बना होता है और इसका उपयोग वर्टिकल गार्डन में भी किया जाता है। कुछ पौधे स्वचालित रूप से खुद को ट्रेलिस के चारों ओर लपेटते हैं। दूसरों को एक निश्चित दिशा में बढ़ने के लिए सधाई करने की आवश्यकता होती है। इसमें कतार के दोनो छोर में खम्भे गाड़े जाते हैं और उनमें क्षितिज के समानान्तर दिशा में नारियल की मोटी रस्सी या तार की तीन से चार परत 45-60 से.मी. की दूरी पर बांधा जाता है। तत्पश्चात् उनमें करेले की लताओं को चढ़ाया जाता है।

मचान और ट्रेलिस विधि से लाभ

मचान और ट्रेलिस विधि से खेती करने से कई लाभ हैं। मचान का प्रयोग सब्जी उत्पादक बेल वाली सब्जियों को उगाने में करते हैं। मचान के माध्यम से किसान 90 प्रतिशत फसल को खराब होने से बचा सकता है। मचान की खेती के रूप में सब्जी उत्पादक करेला जैसी फसलों में प्रयोग करते हैं। बरसात के मौसम में मचान की खेती फल को खराब होने से बचाती है। फसल में यदि कोई रोग लगता है तो मचान के माध्यम से दवा छिड़कने में भी आसानी होती है। ट्रेलिस विधि से कीट नियंत्रण प्रयासों की निगरानी में मदद कर सकती है क्योंकि यह पौधों को मिट्टी से कीड़े, कीड़े और अन्य परजीवी से दूर रखती है। फलों की सरल तुड़ाई में सहायक होता है।

खरपतवार नियंत्रण

पौधों के बीच खरपतवार उग जाते हैं। उन्हें खेत से हटा देना चाहिए। रोपाई के 10-15 दिन बाद हाथ से निराई-गुड़ाई कर लेनी चाहिए। पहली गुड़ाई के बाद जड़ों के आस-पास मिट्टी चढ़ानी चाहिए।

कीट एवं रोग नियंत्रण

करेले की फसल में निम्न कीट एवं रोगों का प्रकोप होता है जिनका उचित समय पर निवारण करना आवश्यक है।

लाल भृंग कीट

पौधों पर 2 पत्तियाँ निकलने पर इस कीट का प्रकोप शुरू हो जाता है। यह कीट पत्तियों और फलों को खा जाता है। इस कीट की सुंडी भूमि के अंदर पौधों की जड़ों को कटती है।

रोकथाम

लाल भृंगकीट की रोकथाम के लिये कम से कम 40-45 दिन पुराना गोमूत्र को ताम्बे के बरतन में रखकर 5 किलोग्राम धतूरे की पत्तियों एवं तने के साथ उबाले। 7.5 लीटर गोमूत्र शेष रहने पर इसे ठंडा करें एवं छान ले मिश्रण तैयार कर 3 लीटर प्रति टंकी पम्प से फसल पर छिड़काव करें।

फल मक्खी

यह मक्खी फलों में प्रवेश कर अण्डे देती है। अण्डों से बाद में सुंडी निकलती है और वे फल को बेकार कर देती है।

रोकथाम

फल मक्खी की रोकथाम के लिए 40-45 दिन पुराना गोमूत्र को ताम्बे के बर्तन में रखकर 5 किलोग्राम धतूरे की पत्तियों एवं तने के साथ उबाले। 7.5 लीटर गोमूत्र शेष रहने पर इसे ठंडा करें एवं छान ले मिश्रण तैयार कर 3 लीटर प्रति टंकी पम्प से फसल पर छिड़काव करें।

सफेद ग्रब

यह करेले के पौधों को काफी नुकसान पहुँचती है। यह

मिट्टी के अंदर रहती है और पौधों की जड़ों को खा जाती है जिसके कारण पौधे सूख जाते हैं।

रोकथाम

इसकी रोकथाम के लिए नीम की खाद का प्रयोग 5-10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर करें।

एन्थेक्नोज

यह रोग कोलेस्ट्रोटाईकम प्रजाति के कारण होता है। इस रोग के कारण पत्तियों और फलों पर लाल काले धब्बे बन जाते हैं। ये धब्बे बाद में आपस में मिल जाते हैं। यह रोग बीज के द्वारा फैलता है।

रोकथाम

बीज के बोने से पूर्व गोमूत्र या नीम का तेल के साथ उपचारित करना चाहिये।

फल की तुड़ाई कैसे करे ?

फल को नरम अवस्था में ही तुड़ाई करना चाहिए क्योंकि ज्यादा दिन रखने पर वो कड़े हो जाते हैं, जिसे बाजार में बहुत काम लोग पसंद करते हैं। फसल की तुड़ाई हफ्ते में 2 से 3 बार करना चाहिए वैसे तो बुवाई के 80 से 90 दिन में तुड़ाई के लायक हो जाते हैं।

उपज

इसकी उपज 100-120 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक मिल जाती है।

निष्कर्ष

करेला एक पौष्टिक सब्जी है। यदि उपर्युक्त विधि द्वारा करेले की खेती की जाय एवं पेड़ पर लगने वाले रोग की रोकथाम जैविक तरीके से की जाय, तो मिट्टी की गुणवत्ता बनी रहती है, साथ ही साथ अधिक से अधिक करेले की उपज प्राप्त की जा सकती है।

